

नाभिसह्यते (sic) SÂH. D. 474. — Vgl. अभीषाह् (°षह्).

— उद् 1) *tragen, ausdauern, aushalten*: तद्भिर्नित्सहमशक्रात् TBH. 1,1,1. यया वाचोत्सह्यते समापनाय Ait. Br. 3,44. Çat. Br. 1,3,13. — 2) *vermögen, im Stande sein* (sowohl physisch als auch moralisch): पावडुत्सह्यते मनः Spr. (II) 5471. तत्प्रापय विद्वान्मामद्यैवोत्सह्यते यदि KATHÂS. 86,371. Spr. (II) 4734. अन्नवोत्सह्येयास्त्वम् BHATT. 19,16. mit infin. P. 3,4,65. MBH. 1,6139. fg. 4050 (act.). 4231. 5590. 6139. 2,891. 3,2142. 2144. 2252. 2598. 4,2192. 5,6010. 6081. 7124. 7345 (act.). HARIV. 9826 (act.). R. 1,21,12. 60,26. 2,23,10. 30,21. 3,51,17. 4,61,14. 5,36,9. 6,2,49 (act.). ÇÂK. 60,18. 83,7. 36, v. l. Spr. (II) 1637. 3813. KATHÂS. 4,11. 25,80. 39,34. RÂGA-TAR. 3,293. 429. BHÂG. P. 3,2,1. 5,20, 37. 7,6,9. 8,17,6. PAÑÂT. 22,1. SARVADARÇANAS. 161,4. BHATT. 3,54. 5, 59. 14,89. mit acc.: परार्थं यत्नमारभ्य कथं स्वार्थमिहोत्सह्ये so v. a. wie *vermag (soll) ich meine eigene Sache zu betreiben* MBH. 3,2175. सेकार्थमुत्सह्यति so v. a. *vermag zu begiessen* Spr. (II) 387. mit loc.: त्रैलोक्यस्यापि रत्नणे R. GORR. 2,122,16. परविरुद्धेषु so v. a. *विरुद्धानि कर्तुम्* Spr. (II) 2514. पदक्रमे Z. d. d. m. G. 27,41. mit dat.: त्वमथ मैथिलि । नोत्सह्ये परिभोगाय MBH. 3,16543. — Vgl. उत्सह् in डुत्सह् und उत्साह् u. s. w. — caus. उत्साह्यति Jmd (acc.) *bestärken, aufmuntern, zu Etwas (loc.) anstacheln, antreiben* KATHÂS. 62,220. विप्रहे पाण्डवैः सह MBH. 5,5810. प्रियदर्शने 15,461. — desid. vom caus. Jmd zu *bestärken* —, *aufzumuntern* —, *anzustacheln bestrebt sein*: आत्मीयानुत्तिसाह्यविषन्निव BHATT. 9,69.

— अयुद् 1) Jmd (acc.) *zu bewältigen* —, *Jmd zu widerstehen vermögen*: नैनमभ्युत्सह्यन्केचितावकाः MBH. 6,2351. — 2) *vermögen, im Stande sein*; mit infin. MBH. 3,13206 (act.). RAGH. 5,22.

— प्रोद् voller Muth sich anschicken, mit infin.: ततः प्रोद्सह्यन्सर्वे योद्धुम् BHATT. 17,96. Vgl. प्रोत्साह्. — caus. *bestärken, aufmuntern, auffordern, anstacheln, reizen*: ये त्वां प्रोत्साह्यन्ति MBH. 5,4198. 8,3703. PRÂJACITTEND. 30,a,2. 70,b,5. KULL. zu M. 7,194. Schol. zu P. 1,4,41. रामं वदन्तम् VOP. 5,15. गुरोर्वक्त्रपरिस्पन्दे मनः प्रोत्साह्यतीव (= साह्यति NILAK. mit Erwähnung der v. l. परिस्पन्दमुत्प्रोत्साह्यति मे MBH. 1, 2233. विक्रमेष्वप्रतिहतं तेजः प्रोत्साह्याम्यहम् R. 4,26,19. प्रोत्साह्यति 2,9,46. 21,12. 33,28. 6,12,6. KATHÂS. 14,25. 123,341. Verz. d. Oxf. H. 122,a,35. RÂGHAVAP. 13 in der Unterschr. संकल्पेन प्रोत्साह्यन्ति impers. PRAB. 102,2. प्रोत्साह्यन्तः MBH. 6,4437 schlechte Lesart in der ed. Bomb. st. प्रोत्साह्यन्तः der ed. Calc. Vgl. प्रोत्साह्यन्.

— समुद् *vermögen, im Stande sein*; mit infin. MBH. 5,896 (act.). R. 7,59,1,17. MÂR. P. 75,60. Vgl. समुत्साह्. — caus. *bestärken, aufmuntern, anstacheln* MBH. 2,1412. समुत्साह्य 14,2352 fehlerhaft für समुत्साह्य, wie die ed. Bomb. liest.

— नि, षह्यते P. 8,3,70. न्यषह्यत und न्यसह्यत 71. °सोहा 115. VOP. 8,45. 126. Vgl. नोषह्. — caus. aor. न्यसीसह्यत् P. 8,3,116. VOP.

— निम् वgl. निःषह्.

— परि, षह्यते P. 8,3,70. पर्यषह्यत und पर्यसह्यत 71. °सोहा, °सोहुम् 115. षह्यता VOP. 8,45. 125. *ertragen, aushalten, widerstehen*: यन्न व्यसह्यन्तेऽपि कपिः पर्यसह्यत् तत् BHATT. 9,73. — caus. aor. पर्यसीषह्यत् P. 8,3,116.

— प्र 1) *besiegen, siegen*: सत्त्वा देव प्र णस्पृहः RV. 1,42,1. प्रसह्यन्तव कला 4,12,1. मायाभिर्मायिनिम् 5,30,6. 2,9. 10,99,2. 120,6. शत्रून् 180, 1. AV. 7,35,1. 13,2,31. *fertig werden* —, *es aufnehmen können mit* (acc.): चतुरङ्गं ह्यपि बलं मुमह्यत्प्रसह्यमाहि R. 2,51,7 (48,7 GORR.). तमुद्यत्तं प्रसह्यत कः KUMÂRAS. 2,57. मयाभिगुप्तं श्रीमत्तं न कश्चित्प्रसह्यति HARIV. 9825. चतुरङ्गं ह्यपि बलं प्रसह्ये वयं युधि R. 2,86,8. प्रसह्यामि R. GORR. 2,94,9. त्वां वर्तमानं हि सतां सकाशं नालं प्रसोढुं बलह्यपि शक्रः MBH. 1,3574. R. 2,51,10. 86,11. प्रसोढुम् R. GORR. 2,48,10. *Gewalt über Jmd haben, Jmd Etwas anhaben können*: अस्मान् पापं प्रसह्यते MBH. 1,5711. — 2) *Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen*: यो विषादं विषह्यते Spr. (II) 5652. — 3) *vermögen, mit infin.* MBH. 1,4842. 16,281. प्रसह्य partic. mit inf. = *शक्य* Spr. (II) 4761. — 4) *Etwas ertragen, aushalten, einer Widerwärtigkeit widerstehen*, — *nicht unterliegen*: न तेजस्तेजस्वी प्रसह्यन्ते परेषां प्रसह्यते Spr. (II) 3274. RAGH. 4,82. कथं तस्य रणे वेगं मनुष्यः प्रसह्यति MBH. 5,2034. — 5) *zu tragen* —, *zu leiden haben*: सिंहव्याघ्रवराहाणां निनादं प्रसह्यति R. GORR. 2,52,29. (तीव्राणि दुःखानि) प्रसह्यामि (vielleicht प्रसह्यामि zu lesen) MBH. 8,1274 (die ed. Bomb. hat eine andere Lesart). — 6) absol. प्रसह्य a) *mit Anwendung von Gewalt*, — *Kraft, gewaltsam* AK. 3,5,10. H. 1339. प्रसह्यापहृत्य (so ist wohl zu lesen) Ind. St. 3,464,19. कन्याहरणम् M. 3,33. दण्डेनैव प्रसह्यतान् शनैर्वशमानयेत् 7,108. यो प्रसह्य वृको हन्यात् 8,235. प्रसह्योहा MBH. 1,149. 5,5957. 5981. R. 1,29, 3,3,42,59. 52,52. 5,36,36. RAGH. 2,27. 3,56. Spr. (II) 4662. MÂLAV. 77. PRAB. 78,4. BHÂG. P. 4,4,17. 13,41. 9,16,12. — b) *in hohem Grade, gar sehr*: प्रसह्य धर्षितस्तत्र सेमो वै राजपद्मणा HARIV. 1358. MBH. 1, 1181. 3,15674. R. GORR. 2,17,39. सत्यं च नेत्रं स्फुरति प्रसह्य MÂLAV. 143,14. — c) *ohne irgend eine Rücksicht zu nehmen, ohne Weiteres, ohne sich lange zu bedenken*: (ताम्) देवीनामुपरि प्रसह्य कृतवान् KATHÂS. 6,167. 12,106. प्रसह्य सिंहासनमारोह्य तत् 20,225. — d) *mit Nothwendigkeit, jedenfalls, durchaus*: तान्प्रसह्यन्पौ हन्यात् M. 9,269. Spr. (II) 4283. VARÂH. BRH. S. 103,7. आयासयोगेन हि संप्रवृद्धः प्रसह्य कृत्ति द्विदान्प्रतापः KÂM. NRTIS. 15,8. BHÂG. P. 4,19,28. 5,26,35. mit einer Négation durchaus nicht: न कश्चिद्योषितः शक्तः प्रसह्य परिरन्तिमुम् M. 9,10. KATHÂS. 36,133. प्रसह्य सः । न तथा प्रतिपेदे तन्निन्दान्यधिकं पुनः 27,26. प्रसह्य नाशकदन्तुम् 45,210. — Vgl. प्रसह्यन्, प्रसह्यम्, प्रसह्यं figg., प्रसाह्, प्रासह् fig. und प्रासाह्.

— अभिप्र *vermögen, mit infin.* KIR. 12,18.

— संप्र 1) *Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen*: एवं स्वराज्यनाशे त्वं शोकं संप्रसह्यसि MBH. 12,8277. — 2) *Etwas ertragen, aushalten, überwinden*: कथं दुःखमिदं तीव्रं गान्धारी संप्रसह्यति (संप्रसह्यति ed. Bomb.) MBH. 9,3515. — 3) absol. *संप्रसह्य jedenfalls, durchaus* MBH. 5,1896. 1915.

— प्रति *widerstehen, fertig werden mit*. यदिहोत्पद्यते भूतं कस्तत्प्रतिसह्यते R. 1,37,8.

— वि, षह्यते P. 8,3,70. व्यषह्यत und व्यसह्यत 71. VOP. 8,45. 125. 1) *überwältigen, in der Gewalt haben, es mit Jmd aufnehmen können, fertig werden mit Jmd, Jmd Etwas anhaben können*: इन्द्रो मृगानि दयते विषह्य RV. 7,21,7. शत्रून् AV. 3,10,2. घृत्रिणाः AV. 4,10,2. 19,46,2.